महिला लेखकों की कहानियों में अभिव्यक्त आर्थिक परिप्रेक्ष्य : दो हज़ार दस के बाद के संदर्भ में

अंजना .एम
शोधार्थी
हिंदी विभाग,केरल विश्वविद्यालय
तिरुवनंतपुरम,केरल

डॉ.आर.जयचंद्रन
आचार्य
हिंदी विभाग केरल विश्वविद्यालय
तिरुवनंतपुरम,केरल

सारांश :आज़ादी के बाद आर्थिक दृष्टि से हमारे देश में परिवर्तन तो हुए हैं लेकिन अब भी बहुत सारी ऐसी लोग हैं जो आर्थिक समस्याओं से जूझती है। किसान हो या मज़दूर आर्थिक तंगी जीवन की कड़ी को रोकती है। जिसका प्रतिरोध कहानीकारों ने अपनी कहानियों के माध्यम से किया है।अर्थ, समाज की केन्द्रीय शक्ति है। संसार के सभी कार्य-कलाप अर्थ पर ही आधारित है। सामान्यतः आर्थिक दृष्टि से उन्नत समाज को ही विकसित समाज कहा जाता है।

वर्तमान में सामाजिक सम्बन्धों का आधार प्रमुखतः अर्थ बन गया है। "अर्थ ही समाज की शिराओं में बहने वाला वह रक्त है जो सम्पूर्ण समाज का जीवन संचालित करता है। प्रत्येक युग का सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन अर्थ-प्रक्रिया से प्रभावित रहा है। विकास का मूल आधार अर्थ ही है।"[1]

प्रज्ञा, गीताश्री, उर्मिला शिरीष, वंदना राग, सुधा अरोड़ा आदि समकालीन महिला कहानी लेखकों ने आर्थिक जीवन के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला है। इन कहानीकारों ने अपनी कहानियों के माध्यम से समाजवादी और पूँजीवादी व्यवस्था का आर्थिक परिवेश को व्यक्त किया है। मनुष्य जीवन में अर्थ की महत्ता बहुत अधिक है। क्योंकि बिना अर्थ के जीवन आगे नहीं बढ़ सकता। किसी भी क्षेत्र में अर्थ की जरूरत पड़ती है। आर्थिक स्थिति बिगड़ने से उत्पन्न समस्याओं के विविध पहलुओं को कहानीकारों ने अभिव्यक्त किया है।

आज के समाज धन के पीछे भाग रहे हैं। जैसे कि समाज में जो घटित होता है वहीं साहित्य में झलकता है। समाज के नब्ज़ को पकड़कर कहानीकारों ने कहानी विधा को सम्पन्न किया है। "किसी भी समाज का सम्पूर्ण विकास उसके आर्थिक ढाँचे पर ही निर्भर करता है। अर्थ की व्यवस्था का प्रभाव सामान्य-जनों पर पड़ता ही है। परिवार, समाज, राजनीति, धर्म, साहित्य, कला का विकास अर्थ पर ही आधारित है। अर्थ ही वह शक्ति है जो सारे समाज की बागडोर को थामे है। अर्थव्यवस्था में परिवर्तन आते ही सारे सामाजिक स्तर में परिवर्तन दिखाई देते हैं।"[2] प्रज्ञा की सन् 2021 में प्रकाशित 'रज्जो मिस्त्री' कहानी संग्रह की कहानी 'उलझी यादों की रेशम' में आत्मीय संवेदनाओं की कहानियाँ हैं। जिसमें पिता आर्थिक तंगी से जूझते हुए भी परिवार को संभालने की कोशिश कर रहा है। पिता कभी भी हालात से समझौता नहीं करते, बल्कि हालात से लड़ते हैं और परिवार को एक धागे में बांधकर रखने की कोशिश करता है। सामान्य वर्ग के लोग आर्थिक तंगी से इस कदर परेशान होती है कि उन्हें एक समय का खाना मिलना भी मुश्किल हो रहे हैं। बेरोजगारी की समस्या ही आर्थिक समस्या का मुख्य कारण है। नारी को आर्थिक व्यवस्था में अपने आप पर निर्भर रहना पड़ेगा। नारी की स्थिति को ध्यान में रख कर कह सकते हैं कि आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र लड़की भी पारिवारिक मान्यताओं के सामने विवश पड़ती है। 'मालूशाही मेरा छलिया बुरांश' प्रज्ञा की सन् 2022 में प्रकाशित हुआ कहानी संग्रह है। इस संग्रह की कहानियों में श्रमशील वर्ग से लेकर मध्य वर्ग शहर से गांव तक के लोगों को आर्थिक जीवन का परिवर्तनों को पकड़ने का प्रयास प्रज्ञा जी ने किया है। आर्थिक रूप से सक्षम होने की भागदौड़ में लोग अपने रिश्ते नाते भूल जाते हैं। अपने बच्चों व परिवार के लिए उनके पास समय नहीं है। जीवन को सुगमय एवं सफलतापूर्वक चलाने के लिए धन तो जरूरी है लेकिन धन का मोह रिश्तों पर भारी नहीं पड़नी चाहिए।

प्रज्ञा का सन् 2019 में प्रकाशित 'मन्नत टेलर्स' कहानी संग्रह की कहानी 'लो बजट' में प्रखर नामक पात्र के ज़रिये एक घर या मकान ढूंढने का प्रयास और उसकी बजट के अंदर मिलने के लिये इधर उधर भागते रहते लोग की कहानी है। पूरी कहानी में घर दिखानेवाला एक एक मकान दिखाते वक्त 'आपके बजट' में शब्द का प्रयोग करते हैं। प्रखर के पास काम होने के बावजूद भी परिवार को संचालित कराने में मुश्किल हो रहा है। आजकल महंगाई भी इतना बढ़ गई है कि आम जनता की जिंदगी गुजारना कठिन हो रहा है। आम जनता में निरंतर आर्थिक अभाव पाया जाता है।

गीताश्री का सन् 2015 में प्रकाशित 'स्वप्न साजिश और स्त्री' कहानी संग्रह में आर्थिक रूप में आत्मसमर्पण होना चाहती स्त्रियों की कहानियाँ हैं। स्वावलंबन से ही सम्मान प्राप्त होता है। जहाँ जहाँ औरतें कमाती थी वहाँ उनकी स्थिति बेहतर थी। दो हज़ार दस के बाद की महिला लेखकों की कहानियों में लेखकों ने अपने पात्रों द्वारा महिलाओं को आर्थिक रूप से सफल बनने की प्रेरणा भी दे रही हैं।गीताश्री का सन् 2021 में प्रकाशित कहानी संग्रह 'बेलम कलकत्ता' में 'बेलम कलकत्ता पहुँच गए न' कहानी में शांति और नीलू जो माँ बेटी है। माँ तीन कोठियों में काम करके महीने के अंत में तनख्वाह के इंतजार में रहती थी। खर्च के बाद जो बचती थी उसे बेटी के भविष्य के लिए संभालकर रखती थीं। लेकिन पति नशे की लत में आकर मारपीट कर सब कुछ हड़पता था। "तीन कोठियों में काम करती है, तीनों से अलग अलग बहाने बना कर पैसा ले चुकी है। उसके बाद पगार का ही इंतजार बाकी था। वो भी कट कर मिलेगा, तीनों जगह से। यानी पैसे की भयंकर किल्लत होने वाली थी, महीने के अंत और शुरुआत में। इस बार की सर्दी ने उसकी अधेड़ हड्डियों में सुराख कर दिया था। घिसा हुआ

शॉल ओढ़ कर बर्फीली सर्द हवाओं से जूझने का दर्द उसकी हड्डियाँ अच्छे से जानती थीं, जिनकी सिंकाई वो घर आकर कोयले के चूल्हे पर किया करती थी। एक ही सिलिंडर होने के कारण गैस का चूल्हा कम जलाती थी।"[3] गीता श्री के रचनात्मक प्रयोग से आर्थिक विषमता का भयानक दृश्य समझ सकते हैं। आर्थिक दबाव के कारण किसी में आर्थिक रूप से समर्थ होने की इच्छा होती तो किसी में जो मिलता है उसे संभालकर रखने की कोशिशों होती है। खासकर निम्न मध्यवर्ग के लोग। गरीब आदमी के सामने पैसे का संकट हमेशा से रहता है। इसी संग्रह की दूसरी कहानी 'उनकी महफिल से हम उड़ तो आए' में कम उम्र में चरखी नामक लड़की की शादी करा देती है। "आर्थिक संकट के फलस्वरूप ही कहीं निम्न-मध्यवर्गीय माँ-बाप अपनी बेटी का विवाह करने में असमर्थ हैं और कहीं कर्ज के बोझ से दबकर विवाह करते हैं तो कहीं अनमेल विवाह करके लड़की को उसके भाग्य पर छोड़ने का विश्वास कर अपने कर्त्तव्य से छुट्टी पाते हैं।"[4]

सुधा अरोड़ा ने पारिवारिक सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था की समस्याओं एवं चुनौतियों को केंद्र में देखकर नारी जीवन पर दृष्टि डाली है। जीवन की आर्थिक स्वायत्तता पर बल दिया है। सुधा अरोड़ा की नारी पात्र शिक्षित भी है आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर भी है लेकिन कभी-कभी असमंजस्य की स्थिति में पड़ती है। आर्थिक विभिन्नता के फलस्वरूप व्यक्ति समय से पहले बूढ़ा हो जाता है।

समकालीन कहानियों में जीवन यथार्थ की अभिव्यक्ति हुई है। उर्मिला शिरीष की कहानी संग्रह 'कुर्की और अन्य कहानियाँ' की कहानी 'चेहरे' में माँ अपने बच्चे गौतम और टीना को कड़ी मेहनत करके पढ़ाती है। आठवीं कक्षा तक पढ़ी लिखी होने के बावजूद उसे बच्चों की भविष्य की एक एक सीढ़ी के बारे में अवगत थी। घर की आर्थिक स्थिति बुरी होने के कारण बच्चों को बारहवीं कक्षा तक कॉन्वेंट में रखकर पढ़ाती है। अपनी हालत बच्चों को भी न हो इसके लिए भरसक प्रयास करती है। "उसकी निगाहों में कुछ ऐसी चुभन थी कि उन्हें बच्चों की तैयारी भारी लगने लगी। जानती है हर मां बच्चों के लिए श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम करना चाहती है, श्रेष्ठ और सुंदर चीजें खरीदना चाहती है, उनके लिए श्रेष्ठ शिक्षा देना चाहती है, लेकिन यह सब करने की गुंजाइश हो, तब न।"[5] अपनी अकेलापन, उदासी बच्चों के करियर में बाधा न हो इस बात का ध्यान रखती थी। आर्थिक समस्या मानसिक बल पर हावी होने नही देती थी।इसी प्रकार आज की नव कहानीकारों ने सकारात्मक सोच प्रदान की है।

इसी कहानी संग्रह के एक और कहानी है –'निगाहें' ।इस कहानी में भी आर्थिक तंगी की पराकाष्ठा को दिखाया गया है। एक छोटी सी बच्ची को घर की हालत बिगड़ने से पढ़ाई छूटनी है और कम उम्र में काम के लिए भेजते हैं। वहाँ काम करने के बावजूद भी तनख्वाह नहीं मिलती। मज़दूरी कराकर उस बच्ची को पगार भी नहीं देता है। उस छोटी सी बच्ची जिसकी हँसी मज़ाक का समय, जिसको शिक्षा की जरूरी है उस बच्चे की बचपन का नींव ही खत्म होती है। आर्थिक विषमताएं कितनी भयानक होती है। आज श्रमिक से ज्यादा श्रम को स्थान मिला है। श्रमिक तो शोषण का शिकार होते हैं। श्रमिकवर्ग आर्थिक कठिनाइयों के बीच गुज़ारा करता है। इस कहानी में उस बेटी के साथ यही हुआ है। आज की आर्थिक विभीषिका खासकर निम्न मध्यवर्गीय लोगों को असहनीय प्रतीत हुआ है ।

उर्मिला शिरीष की हाल ही में प्रकाशित कहानी संग्रह 'ये देश बता तुझे क्या हुआ है' कहानी संग्रह की अधिकांश कहानियाँ कोरोना महामारी से पीड़ित लोगों की आर्थिक छवि दिखाती है। लोगों को उनकी आर्थिक विपन्नता परिवार की जड़ता को उजाड़ती है। प्रस्तुति कहानी संग्रह की एक कहानी में जगदीश नामक पात्र को ऑपरेशन के लिए आठ-नौ लाख की जरूरत है। लेकिन उस पैसा जगदीश के लिए भारी रकम था। इसी तरह महामारी से उत्पन्न आर्थिक समस्याओं का विभिन्न पहलुओं को महिला लेखकों ने दर्शाया है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि प्रज्ञा, गीताश्री, उर्मिला शिरीष, सुधा अरोड़ा आदि कहानीकारों की कहानियों में आर्थिक विपन्नता की विविध पक्षों को अभिव्यक्ति देने की सफल प्रयास हुआ है। समाज की वास्तविक स्थिति का चित्रण साहित्यकार अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। आर्थिक आत्मनिर्भरता हर एक व्यक्ति के लिए ज़रूरी है। मनुष्य की जीवनशैली में भी अर्थ का ही वर्चस्व है। आज की दुनिया में वर्तमान आर्थिक असमानतायें व स्थितियों को महिला लेखकों ने अपनी कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत करने में सफलता प्राप्त की है।

****

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास मूल्य संक्रमण- डॉ. हेमेन्द्र कुमार पानेरी - पृ.सं-204,संधी प्रकाशन,जयपुर-1974
2. राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में व्यक्ति और समाज- डॉ. राधा गिरधारी, पृ.सं-86, चंद्रलोक प्रकाशन ,कानपुर-1995
3. बलम कलकत्ता – गीताश्री – पृ.सं-13,प्रलेक प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड-महाराष्ट्र,मुम्बई
4. हिंदी उपन्यासों में मध्य वर्ग- हेमराज निर्मम- पृ.सं-173, चंद्रलोक प्रकाशन,कानपुर-1995
5. कुर्की और अन्य कहानियां- उर्मिला शिरीष- पृ.सं- 109,सामयिक प्रकाशन,जटवाड़ा, दरियागंज, नई दिल्ली